प्रदर्शनी में=7रोज समझाओ फिर कहो 7रोज एक घण्टा रोज आओ। आपको ऐसा रस्ता बतावेंगे जो तुम बाप से वर्सा पावेंगे। तो प्रदर्शनी भी जरूर सात रोज रखनी पड़े। बोलो 7रोज आकर समझेंगे तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जावेगा। निश्चय से समझना चाहिये फिर चाहे प्रदर्शनी में आवें चाहे सेन्टर पर। तो बाबा डायरेक्शन देते है कि 7रोज से कम प्रदर्शनी कहीं भी नां रखो। सात रोज कोई एक घण्टा आवें तो हम उनको त्रिकाल दर्शी बना देंगे। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा कल्प-2 भारत को ही मिलता है। अभी वो ही समय है। तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन सकते हो। हम एक युक्ति बतावेंगे जो तुम 21जन्म तक स्वर्गवासी बन जावेंगे। सात रोज आने से हमसारी दुनिया का राज़ समझा कर चक्रवर्ती राजा बना सकते है। ऐसे सात रोज की चैलेंज कब कोई प्रदर्शनी में देते नही है। सात रोज में हम क्या-2 समझावेंगे वो बता देना चाहिये। सृष्टी की आद मध्य अन्त के ज्ञान को भी बाप ही जाने ज्ञान का सागर जानते है। मूल वतन सुक्ष्म वतन आद का सब राज समझावेंगे, भारत की आधा कल्प की बिमारी है फिर आधा कल्प बिमारी नही है। उनको स्वर्ग उनको नर्क कहा जाता है। समझाते तो है परन्तु फिर भूल भी जाते है। बाकी मेले आद में कब नही जाना चाहिये रायल होना चाहिये। बड़े आदमी आवेंगे तो छोंटे आ ही जावेंगे। पहले-2 बाप का ही परिचय देना है। ऊंच ते ऊंच बाप। वो शिव ही भगवान है। हम कृष्ण को भगवान नही मानते। बेहद का शिव बाबा हमको पढ़ाते है। वो कहते है मुझे याद करो जो पाप मिट जावेंगे। आत्मा सतोप्रधान कैसे बने इसके लिये शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा कहते है कि मुझे याद करो। प्रजापिता ब्रह्मा है तो ब्राह्मण भी चाहिये। यह सब ब्राह्मण है पीछे देवता बनते है। ब्रह्मा नो होते तो हम ब्राह्मण ब्राह्मणियां कैसे बनते? यह ब्रह्मा देवता नही है। यह ब्रह्मा है। ब्रह्मा ही मनुष्य से देवता बनते है।हम ब्रह्मा को देवता नही मानते है। हम ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ है यह ब्रह्मा है। बोलो ही ऐसेः- ब्रह्मा माना ही ब्राह्मण। ब्राह्मण राजयोग सीख कर फिर देवता बनते है। यहब्रह्मा भी सहज राजयोग से देवता बनते है। पवित्र बनते है फिर देवता कहा जाता है।सब बातें समझाने की होती है। झाड़ के नीचे भी बैठे है नां।यह ब्रह्मा इस राजयोग से देवता बनते है। वो ही ब्राह्मण है जो फिर देवता बनते है। ओम शान्ती गुड़ नाईट

29-1-67:-यह जो प्रदर्शनी के चित्र है, सब समझा सकते है। प्रदर्शनी में समझाने से प्रैक्टिस अच्छी होती है। अपनी उन्नती हर एक को करनी है। अगर अपनी ही उन्नती नही करते है तो समझा जाता है बुधी नही है। टीचर से कब कोई बच्चा नही पढ़ता है तो बाप भी टीचरको भी समझते है।यहांतो बाप दादा दोनों है। पद तो बहुत ऊंचा है। तो पुरूषार्थ करना चाहिये नां। बाप कहते है श्रीमत पर चलते रहेंगे तो श्रेष्ट ते श्रेष्ट बनेंगे। एक तो निश्चय हो कि बाप है। बाप से वर्सा तो जरूर मिलता है। वर्सा भी स्वर्ग का मिलता है। राजाई का भी वर्सा है। गरीब ते गरीब बनने का भी है। जितना जो पढ़ेंगे उतना पद पावेंगे। बच्चे तो तो सब है। स्कूल में भी बच्चे जाते है जितना पढ़ेंगे उतना पावेंगे। यह बड़ी भारी मंजिल है। कल्प रूपान्तर के लिये बहुत चोट खानी पड़ती है। कई-2 सेन्टर की हेड्स है, किसीको दूसरे सेन्टर पर जाने दिल होती है तो उनको मनाह करती है, सब सेन्टर्स शिव बाबा के है। नम्बरवार तो होते है। ब्राह्मणी को रोकना नही चाहिये। नही तो स्टूडेन्टस भी समझेंगे यह हमको रोकती क्यूं है। कितना भी दूर है वो पास वालों को छोडकर दूर वालों पर जा सकते है, जहां भी जिसकी दिल शौक हो जावे। कोई को मनाह नही करते है। जो मनाह करती है वो अपनी ही डिससर्विस कर पद भ्रष्ट करते है। और जब कोई प्रदर्शनी करते है तो सबको फर्ज़ है मदद करा देने का। ऐसे मनाह नही करना चाहिये यहां तुम क्यों जाते हो। ऐसे जो स्टूडेन्टस को मनाह करते है तो वो और ही दुर्गती को पाते है। किसीको नराज भी नही करना है। यह तो अच्छी चलन नही है नां। दूसरी बात मैगजिन जो निकलती है, जो पढ़ते है और समझते है कि बहुत अच्छी मैगज़ीन निकली है, तो जो मैगजीन निकालते है उनको लैटर भी भेजना चाहिये। बाबा को

को भी रिपोर्ट देनी चाहिये कि इस मास की मैगजीन अच्छी निकली है। है तो बच्चों के ही लिये। वो भी इससे खुश होंगी। यह भी एक सभ्यता है। कोई अच्छा गुण सिखावे तो उनको थैंक्स देना चाहिये। इसको कृपा कहा जावे। आशीर्वाद नही। कृपा करते है किसको समझाने की। इसको पढ़ाना यह भी आशीर्वाद वा कृपा ही है। बाप को तो फर्ज है। ड्रामा अनुसार आते ही है पढ़ाने। वो समझाने। बाप को अन्धों की लाठी कहते है। बुलाते है कि पतित पावन आओ तो इस समय की बात है ना। गीता में भी है अन्धे की औलाद अन्धे। कहते है आओ बन्धन से मुक्त कर मुक्तिधाम में ले चलो। अन्धे है तब तो पुकारते है। साधु सन्त सब पुकारते ही है पतित पावन आओ वा अन्धों की लाठी आओ। बाप एक ही है। पावन होने बिना तो जा ही नही सकते है।

30-1-1967: रात्री क्लास:-देहली में सर्विस का चांस अच्छा है। आगे चल कर देखेंगे परोक्ष मौत सामने है।
* ******************

पहले 10 वर्ष लिखते थे अब 9 वर्ष अन्दर लिखना चाहिये। भारत में 9 वर्ष के अन्दर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो जावेगी। और अनेक धर्म विनाश हो जावेंगे कल्प पहले मुआफिक ड्रामा प्लान अनुसार। अपनी तो प्रैक्टीकल बाते है ना। भारत में 9 वर्ष के अन्दर सतयुग 100% सुख शान्ती पवित्रा का राज्य स्थापन ही हो जाना है ड्रामा प्लान अनुसार। बहुत क्लीयर करके लिखना चाहिये जो कि मनुष्य समझें कि यह एक एक वर्ष कम करते ही जाते है। ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष है यह लिखने की दरकार नही है। यह तुम बच्चे ही जानते हो। यह बात खोलने की दरकार नही। गन्दे तो बहुत है ना। इस समय तमो प्रधान माया का बहुत जोर है। उसमें से भी काम और क्रोध से तो बहुत खबरदार रहना है। यह बड़े दुश्मन है। कब भी ख्यालात आवें इनसे बात करें, देखें, मनसा तूफान आवें, कर्मणा में नही आना चाहिये कब-2 बाबा मुरली में लिखते है पवित्र रहना है। बाकी आद लिये हर्जा नही है। परन्तु देखा जाता है कि इससे भी बहुत नुकसान कर देते है। अगर बच्चे योग में अच्छी रीत रहते है तो वो ताकत रहेगी। योग में रहने वाले को यह तकलीफ नही होगी। होती है तो समझो योग में नही है। फिर पद भी नही पाते। बाबा कही 2 देखते है कि झगड़ा आद होता है तो कहते है बाकी आद में हर्जा नही। बाकी नग्न नही होना है। परन्तु थोड़ा हाथ पांव चलाने से ही नुकसान हो जाता है। योग में [illegible] रहने से यह बिमारी नही आवेगी। योग ही नम्बरवन है। इसमें ही बहुत फेल होते है। सब फेल होते है। यही बड़ी अच्छी संजीवनी बूटी है। जितना हो सके बचते रहना है तो पद भी अच्छा पावेंगे। नही तो पद भ्रष्ट होगा जन्म जन्मान्तर घाटा हो जावेगा। अब बिलकुल पवित्र बनते है [illegible] जरा भी ताव ना आना चाहिये। हल्का सैमी नशा भी होता है। जो भी बच्चे कुमार कुमारियां है उनको भी बहुत खबरदार रहना है। हंसी कुड़ी करने से भी अपना नुकसान कर देंगे। इससे दूर भागना चाहिये। हंसी कुड़ी रब्बु खेल पाल भी नही करना है। काम और क्रोध दोनों बहुत खराब है। बाकी प्रदर्शनी में तो खुले अक्षरों में लिखना चाहिये भारत में वो ही आदी सनातन देवी देवता धर्मस्थापन हो रहा है योगबल से। 9 वर्ष के अन्दर ही साईलैन्स बल से साइंस बल पर विजय होनी है। जैसे योग बल से ही दैवी राज्य की स्थापना कल्प-2 होती है। ऐसे-2 अच्छे अक्षर लिख कर खुले अक्षरों में बोर्ड पर लगाने चाहिये। बोर्ड बनाने में देरी नही लगती। देहली में तो यह बात जरूर लिखनी चाहिये। 100% सत्य है। गीता ज्ञान दाता शिव भगवानोवाच्य। कल्प पहले मुआफिक योग बल से भारत में फिर से एक धर्म की स्थापना हो रही है। ऐसे -2 शब्द हो जो खुश हो जावे। बाकी भी यह लिखो कि गांधी की मनोकामना पूरी हो रही है तो भी खुश हो जावेंगे। ब्रह्मा के लिये तो समझाया ही है जो योग बल से फरिश्ता बनते है फिर मुक्ति में जाकर जीवनमुक्ति धाम में जाते है। यह अन्तिम 84वां जन्म दिखाया है। यह देवता तो है नही। प्रजापिता ब्रह्मा ऐडापटिड होते है। ब्रह्मा का बाप शिव बाबा। बाबा के पास बहुत समाचार आते है कहते है काम महाशत्रु है। काम कटारी चला देते है। यह कर देते है तो बाबा को भी उल्हना देना पड़ता है कि खबरदार होशियार रहो। ओम